जापान भारती

अंक ३ विक्रम संवत् २०५२ मई १९९५

इस अंक में

हमारा पन्ना

आपका पन्ना

प्रसंग

पर्व

सम्मान

कथा

कला

कविता

बचपन

প্রবন্ধ

কবিতা

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

রন্জন গুপ্ত (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा

२-१०-१५ ताकानावा

मिनातो कू

तोक्यो १०८

फोन/फैक्स/ई-मेल

सौरभ : ०३-३४६२-०८५३

singals@ml.com

रंजन : ०३-३४७३-६०४३

ranjan@twics.com

सुशील : ०३-३८३२-१६४१

हमारा पन्ना

जापान भारती का तीसरा अंक आपके हाथ में है। जैसा हमने प्रथम अंक में ही स्पष्ट कर दिया था, यह जापान में रहकर भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी जड़ों से जुड़े रहने का प्रयास है । इसका उद्देश्य भारतीय भाषा पढ़–लिख सकने वाले जापानी सज्जनों को भारतीय समाज व संस्कृति से परिचित कराना भी है।

इतना तो आप भी मानेंगे कि इस तरह का प्रयास समूचे समुदाय के सहयोग के बिना सार्थक नहीं हो सकता।

आप स्वयं या आपके परिचित, मित्र, बच्चे भारत या जापान से जुड़े किसी भी विषय पर कोई रोचक जानकारी, लेख, कहानी–किस्से, जापान में अपने अनुभव, चुटकुले, भारतीय–जापानी व्यंजन बनाने की विधियाँ लिखकर इस काम में हाथ बटाएँ।

विशेषकर अहिन्दी भाषी भारतीय पाठकों तक यह सन्देश पहुँचाएँ कि हमारे पास लगभग सभी भारतीय भाषाओं के लिए कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर उपलब्ध है। इस समय बांग्ला में प्रकाशन जारी है। इसी तरह अन्य भारतीय भाषाओं में रचनाओं का भी स्वागत है।

आपसे यही अपेक्षा है कि कम से कम इतना तो बताएँ कि पत्रिका नियमित रूप से आप तक पहुँच रही है या नहीं। उसके बारे में क्या प्रतिक्रिया है ? आशा है तीसरा अंक पढ़ते ही आप अपनी लिखित प्रतिक्रिया और आशीर्वाद अवश्य भेजेंगे।

- सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ सिंघल जी,

आपको भी भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएँ स्वीकार हों। मुझे भारती का प्रवेशांक व अंक दो प्राप्त हुए तथा यह जान कर कि जापान में भी ' हिन्दी ' भाषा में भारत, जापान व विश्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने का साधन शुरू हो गया बहुत ही प्रसन्नता हुई, जिसका यश आपको, रंजन कुमार जी को व अन्य सलाह–सहयोगियों को मिलना चाहिए। मेरी खुशी की सीमा नहीं है। अगर मैं आपके या ' भारती ' के लायक कोई सेवा कर सका तो बहुत ही सौभाग्यशाली रहूँगा। जुग जुग जिए ' भारती ' ।

–बिशन चंद शर्मा, कोच्ची, जापान

(कलाकृति भेजने हेतु आभार ,आपके परिचय सहित उसे हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे–सम्पादक)

प्रिय बंधु,

आप लोगों ने भारत की स्मृतियों को मास–दर–मास तरो–ताज़ा करने का जो अपूर्व प्रयास किया है, वह प्रशंसनीय है। यह सदा याद रखने की बात है कि सफलता वह सीढ़ी है जिस पर हमें–आपको स्वयं चढ़ना–उतरना होता है, याँत्रिक सीढ़ी नहीं जो हमें आपको स्वयं चढ़ा ले जाए।

–जापान भारती का एक नियमित पाठक मनीष कुमार जैन,तोक्यो

प्रिय सौरभ,

जापान भारती की प्रतियां मिलीं। अच्छी शुरूआत है । मुझे लगता है कि यह सांस्कृतिक पत्रिका जापान में भारतीय समुदाय को निकट लाएगी । इसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए तुम्हें कुछ संगठित होना होगा । शुभकामनाओं सहित ।

–डा.शशि कुमार,कम्प्यूटर विज्ञान विभाग,आई.आई.टी. दिल्ली

चीनी संस्कृति के प्रभाव में जापान में भी वर्ष क्रम १२ पशुओं से जुड़ा है । जापानी जनजीवन में इस वर्ष क्रम विशेषकर वानर वर्ष का महत्व हमारी चिर–परिचित

मिवाको कोएजुका की कलम से.....

ऐसा क्यों है? कैसे शुरू हुआ होगा ? इस सब का उत्तर किसी को मालूम हो न हो, किसी को पूरी जानकारी हो न हो, जापान में वर्ष १९९५, जंगली सुअर वाला वर्ष है।

संयोग से कोई गम्भीर समाचार नहीं था, नए वर्ष के शुभारंभ की खुशी थी, और क्योंकि माना जाता है कि जापान पूर्वी छोर का देश है जहाँ सब से पहले नया दिन खुलता है, तो अमरीका में टी॰वी॰ पर दिखाया गया कि जापान में तो नए वर्ष के आगमन की खुशी में जंगली सुअर का करतब भी देखने को मिला है। मैंने अपने जीवन में पहली बार जंगली सुअर को चक्के के बीच से छलांग लगाते हुए देखा।

१२ जानवर पारी–पारी से एक–एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह विचार चीनी सभ्यता की देन है। हाँ, वियतनाम में जंगली सुअर की जगह पर पालतू सुअर वाला वर्ष चल रहा है। तो भी कोरियाई प्रायद्वीप में, चीन में, थाईलैंड में, और फिर अन्य अनेक देशों में चीनी मूल के लोगों के बीच सुअर वाला वर्ष चल रहा है। मगर पहली जनवरी को मात्र जापान में ही सुअर वाला वर्ष आरम्भ हुआ।

वर्ष आँकने वाले आरम्भ के विचार में जानवरों का समावेश नहीं था। मगर सुविधा को देखते हुए जानवरों वाली बात जोड़ी गयी।

कालान्तर में यह माना जाने लगा कि एक ही वर्ष में जन्मे लोगों का चरित्र, उसी वर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले जानवर की विशेषता से प्रभावित होता है। न केवल लोगों के चरित्र पर बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या अन्य भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों पर भी यह बात हावी होती है, यह माना जाने लगा।

यह अवश्य है कि हमारा जीवन, मौसम विशेष, प्रकृति विशेष या अन्य असंख्य ताने–बाने से बच नहीं सकता। महाविनाशकारी हानशिन भूकंप के पीड़ितों के लिए एक समान आधार बन चुका है। बात–बात में कहते हैं कि उससे पहले या उसके बाद, यानी १७ जनवरी से पहले तक या उस के बाद।

दसों वर्ष तक अनेक जापानियों के मुँह से यह बात निकलती थी, युद्ध से पहले और युद्ध के बाद। यानी १९४५ से पहले या उसके बाद। कुछ विशिष्ट मसलों में कहा जाता है कि प्राचीन राजधानी क्योतो के निवासियों के लिए युद्ध का मतलब "ओनिन नो रान" यानी "ओनिन वर्ष " वाले युद्ध से होता है। पन्द्रहवीं सदी में हुए दस वर्ष तक के युद्ध में क्योतो शहर पूरी तरह ध्वस्त हो गया था। उस के बाद योद्धाओं का घरेलू युद्ध आरंभ हुआ।

६ अप्रैल को तोक्यो महानगर के राज्यपाल के लिए श्री आओशिमा को चुना गया। ओसाका के लिए इसामु यमादा को चुना गया जिन्हें रंगमंच कलाकार वाले नॉक योकोयामा नाम से भी जाना जाता है। कहने का मतलब है कि दोनों का जन्म १९३२ में हुआ, बंदर वाले वर्ष में। दोनों को ही १९६८ में पहली बार संसद के ऊपरी सदन के सदस्य के लिए चुना गया। बंदर वाले वर्ष में ३६ वर्ष की आयु में।

भारी लोकप्रियता प्राप्त प्रसिद्ध उपन्यासकार शिनतारो इशिहारा को भी १९६८ में संसद के ऊपरी सदन के सदस्य के तौर पर पहली बार चुना गया, सर्वाधिक ३० लाख मतों के साथ। उन का भी जन्म बंदर वाले वर्ष, १९३२ में हुआ। और उन्होंने वानर वर्ष वाले राज्यपालों के चुने जाने के पाँच दिन बाद